अमृत वाणी

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और उद्यम सबसे बड़ा मित्र, जिसके साथ रहने वाला कभी दुखी नहीं होता।
-भर्तृहरि,

अपराधिक तत्वों से मुक्ति की पहल सराहनीय

राजनीति को अपराधिक तत्वों से मुक्त करने की जो पहल चुनाव आयोग कर रहा है उसका समर्थन किया जाना अत्यंत आवश्यक भी है और महत्वपूर्ण भी। दरअसल केवल चुनाव आयोग ही नहीं, देश का समूचा प्रबुध्द और बुध्दिजीवि वर्ग यही चाहता है कि देश की राजनीति अपराधिक तत्वों से मुक्त हो मगर हमारे देश की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हमारे राजनैतिक दल ऐसा नही चाहते। यही वजह है कि राजनीतिक दल चाहे बड़े हों अथवा छोटे, किसी के पास बाहुबलियों और आपराधिक तत्वों की कमी नही होती। बल्कि सच कहा जाय तो यही तत्व उनकी वास्तविक ताकत बने हुए है जबकि इनके कारण पार्टी के आदर्शो, व्यवहार और नाम पर जो प्रतिकूल असर होता है उसकी उन्हें परवाह नही होती।

वस्तुत: यही तत्व है जो लोकतंत्र की निष्पक्षता और शुचिता को नष्ट करते है। कहने को तो हमारे देश में लोकतंत्र के तहत निष्पक्ष और निर्भीक मतदान का दावा किया जाता है मगर इन तत्वों के चलते कई राज्यों में ऐसा बिल्कुल ही नही होता। यही नही दैनन्दिन जीवन में इनकी धौंस और शोषण भी जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित करता है।

निश्चय ही इसके लिए आवश्यक है कि पहल उच्च स्तर से शुरु हो अर्थात सर्वप्रथम दागी नेताओं पर प्रतिबंध लगे। इसी परिपेक्ष्य में चुनाव आयोग ने गंभीर अपराध के आरोपी नेताओं के चुनाव लड़ने पर रोक लगाने का समर्थन किया है। वर्तमान में सजायाफ्ता नेताओं पर चुनाव लड़ने में रोक है लेकिन अक्सर किसी भी आरोपी के मामले में सजा का निर्णय होने में वर्षो लग जाते है। इसलिए संभवत: चुनाव आयोग चाहता है कि अगर किसी नेता पर ऐसे अपराध का आरोप हो जिसमे 5 साल तक की सजा मुमकिन है तो ऐसे नेता के चुनाव लड़ने पर रोक लगना चाहिए बशर्ते कि चुनाव से छह माह पहले केस दर्ज हुआ हो।

आयोग ने सर्वोच्च न्यायालय से यही मांग की है कि रिप्रेजेन्टेशन ऑफ द पीपल एक्ट में सुधार हो ताकि गंभीर अपराधों के मामलों में मुकदमों का सामना करने वाले नेताओं के चुनाव लड़ने पर रोक लग सके। आयोग चाहता है कि अदालत केन्द्र सरकार को कानून में सुधार करने के निर्देश दे ताकि राजनीति के अपराधीकरण पर कुछ हद तक अंकुश लग सके। अगर ये पहल नेताओं से शुरु होगी तो इसका प्रभाव अपराधी चरित्र के कार्यकर्ताओं पर भी पड़ना अवश्य शुरु होगा और अंतत: सचमुच अगर ऐसा हो सका तो देश के लिए बहुत अच्छी बात सिध्द होगी।

राजकाज

भाजपा को परेशान करते राहुल गांधी

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को गुजरात ने एक रास्ता दिखा दिया है। वह गुजरात की तरह कर्नाटक में भी मंदिर जाने की राजनीति कर रहे हैं। इस बार राहुल मंदिर के साथ दरगाह भी गए। वहां उन्होंने चादर चढ़ाई और जीत की दुआ मांगी। इससे भाजपा परेशान है। बीजेपी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार बीएस येदियुरप्पा उन्हें चुनावी हिंदू बता चुके हैं। उनके बाद केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावडेकर ने भी राहुल पर हमला बोला। मंत्री जी का कहना है कि राहुल गांधी के मंदिर जाने से मतदाताओं पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जनता जानती है कि कौन नकली हिंदू है और कौन समर्पित हिंदू। जानकार कह रहे हैं कि यह मंत्री नहीं बोलेए भाजपा का डर बोला है। अगर राहुल के मंदिर जाने से कोई फर्क नहीं पड़ना है तो उन्हें निशाना क्यों बनाया जा रहा है।

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का बयान

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की 26वीं पूर्ण बैठक के बाद जारी बयान में कहा गया कि भारतीय मुसलमान देश में खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं। जब हम दादरी से लेकर राजस्थान एवं हरियाणा तक में गाय की रक्षा के नाम पर हुए उत्पात को देखते हैंए तो समझ में आता है कि बोर्ड की बात सही है। लेकिन कहने वाले यह भी कह रहे हैं कि मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को इस तरह का बयान देने से बचना चाहिए था। दरअसलए भाजपा आजकल किसी भी बयान को भुनाने के लिए तत्पर रहती है। अगर बयान किसी मुस्लिम नेता या संस्था का हो तो फिर उसे भुनाने में भाजपा कोई कसर नहीं छोड़ती। तब सतर्कता क्यों न बरती जाए। क्यों भाजपा को अपनी राजनीति चमकाने का मौका दिया जाए।

शिव हैं निर्माण एवं नव-जीवन के प्रेरक

भगवान शिव आदिदेव है, देवों के देव है, महादेव हैं। सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दु:खों को हरने वाले हैं। वे कल्याणकारी हैं तो संहारकर्ता भी हैं। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुण मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है, जो शिवत्व का जन्म दिवस है। यह शिव से मिलन की रात्रि का सुअवसर है। इसी दिन निशीथ अर्धरात्रि में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये यह पुनीत पर्व सम्पूर्ण देश एवं दुनिया में उल्लास और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह पर्व सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना की ज्योति किरण है। इससे हमारी चेतना जाग्रत होती है, जीवन एवं जगत में प्रसन्नता, गति, संगति, सौहार्द, ऊर्जा, आत्मशुद्धि एवं नवप्रेरणा का प्रकाश परिव्याप्त होता है। यह पर्व जीवन के श्रेष्ठ एवं मंगलकारी व्रतों, संकल्पों तथा विचारों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

आज महाशिव रात्रि पर विशेष

भगवान शिव भोले भण्डारी है और जग का कल्याण करने वाले हैं। सृष्टि के कल्याण हेतु जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का विनाश आवश्यक है। इस विनाश में ही निर्माण के बीज छुपे हुए हैं। इसलिये शिव संहारकर्ता के रूप में निर्माण एवं नव-जीवन के प्रेरक भी है। सृष्टि पर जब कभी कोई संकट पड़ा तो उसके समाधान के लिये वे सबसे आगे रहे। जब भी कोई संकट देवताओं एवं असुरों पर पड़ा तो उन्होंने शिव को ही याद किया और शिव ने उनकी रक्षा की। समुद्र-मंथन में देवता और राक्षस दोनों ही लगे हुए थे। सभी अमृत चाहते थे, अमृत मिला भी लेकिन उससे पहले हलाहल विष निकला जिसकी गर्मी, ताप एवं संकट ने सभी को व्याकुल कर दिया एवं संकट में डाल दिया, विष ऐसा की पूरी सृष्टि का नाश कर दें, प्रश्न था कौन ग्रहण करें इस विष को। भोलेनाथ को याद किया गया गया। वे उपस्थित हुए और इस विष को ग्रहण कर सृष्टि के सम्मुख उपस्थित संकट से रक्षा की। उन्होंने इस विष को कंठ तक ही रखा और वे नीलकंठ कहलाये। इसी प्रकार गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये भोले बाबा ने ही सहयोग किया। क्योंकि गंगा के प्रचंड दबाव और प्रवाह को पृथ्वी कैसे सहन करें, इस समस्या के समाधान के लिये शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को समाहित किया और फिर अनुकूल गति के साथ गंगा का प्रवाह उनकी जटाओं से हुआ। ऐसे अनेक सृष्टि से जुड़े संकट और उसके विकास से जुड़ी घटनाएं हैं जिनके लिये शिव ने अपनी शक्तियों, तप और साधना का प्रयोग करके दुनिया को नव-जीवन प्रदान किया। शिव का अर्थ ही कल्याण है, वही शंकर है, और वही रुद्र भी है। शंकर में शं का अर्थ कल्याण है और कर का अर्थ करने वाला। रुद्र में रु का अर्थ दु:ख और द्र का अर्थ हरना- हटाना। इस प्रकार रुद्र का अर्थ हुआ, दु:ख को दूर करने वाले अथवा कल्याण करने वाले।

भौतिक एवं भोगवादी भागदौड़ की दुनिया में शिवरात्रि का पर्व भी दु:खों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है। दिखावे, ढोंग एवं आडम्बर से मुक्त विद्वान-अनपढ़, धनी-निर्धन कोई भी अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य से उनकी पूजा और अर्चना कर सकता है। शिव न काठ में रहता है, न पत्थर में, न मिट्टी की मूर्ति में, न मन्दिर की भव्यता में, वे तो भावों में निवास करते हैं।

यह पर्व महाकाल शिव की आराधना का महापर्व है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन पूजा एवं अभिषेक करने पर उपासक को समस्त तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होता है। शिवरात्रि का व्रत करने वाले इस लोक के समस्त भोगों को भोगकर अंत में शिवलोक में जाते हैं। शिवरात्रि की पूजा रात्रि के चारों प्रहर में करनी चाहिए। शिव को बिल्वपत्र, धतूरे के पुष्प तथा प्रसाद में भांग अति प्रिय हैं। लौकिक दृष्टि से दूध, दही, घी, शकर, शहद- इन पाँच अमृतों (पंचामृत) का पूजन में उपयोग करने का विधान है। महामृत्युंजय मंत्र शिव आराधना का महामंत्र है। शिवरात्रि वह समय है जो पारलौकिक, मानसिक एवं भौतिक तीनों प्रकार की व्यथाओं, संतापों, पाशों से मुक्त कर देता है। शिव की रात शरीर, मन और वाणी को विश्राम प्रदान करती है। शरीर, मन और आत्मा को ऐसी शान्ति प्रदान करती है जिससे शिव तत्व की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। शिव और शक्ति का मिलन गतिशील ऊर्जा का अन्तर्जगत से एकात्म होना है। लौकिक जगत में लिंग का सामान्य अर्थ चिह्न होता है जिससे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग की पहचान होती है। शिव लिंग लौकिक के परे है। इस कारण एक लिंगी है। आत्मा है। शिव संहारक हैं। वे पापों के संहारक हैं। शिव की गोद में पहुंचकर हर व्यक्ति भय-ताप से मुक्त हो जाता है।

शिवरात्रि जागृति का पर्व है। जिसमें आत्मा का मंगलकारी शिव से मिलना होता है। यह आत्म स्वरूप को जानने की रात्रि है। यह स्वयं के भीतर जाकर अथवा अंतश्चेतना की गहराइयों में उतरकर आत्म साक्षात्कार करने का दुर्लभ प्रयोग है। यह आत्मयुद्ध की प्रेरणा है, क्योंकि स्वयं को जीत लेना ही जीवन की सच्ची जीत है, शिवत्व की प्राप्ति है। काल के इस क्षण की सार्थकता शिवमय हो जाने में है। शक्ति माया नहीं है, मिथ्या नहीं है, प्रपंच नहीं है। इसके विपरीत शक्ति सत्य है। जीव और जगत भी सत्य है। सभी तत्वत: सत्य हैं। सभी शिवमय हैं।

शिव शक्ति के प्रतीक ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ काल में हुआ था। शिव पुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा ने इसी दिन रुद्र रूपी शिव को उत्पन्न किया था। शिव एवं हिमालय पुत्री पार्वती का विवाह भी इसी दिन हुआ था। अत: यह शिव एवं शक्ति के पूर्ण समरस होने की रात्रि भी है। वे सृष्टि के सर्जक हैं। वे मनुष्य जीवन के ही नहीं, सृष्टि के निर्माता, पालनहार एवं पोषक हैं। उन्होंने मनुष्य जाति को नया जीवन दर्शन दिया। जीने की शैली सिखलाई।

शिवरात्रि भोगवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध एक प्रेरणा है, संयम की, त्याग की, भक्ति की, संतुलन की। सुविधाओं के बीच रहने वालों के लिये सोचने का अवसर है कि वे आवश्यक जरूरतों के साथ जीते हैं या जरूरतों से ज्यादा आवश्यकताओं की मांग करते हैं। इस शिवभक्ति एवं उपवास की यात्रा में हर व्यक्ति में अहंकार नहीं, बल्कि शिशुभाव जागता है। क्रोध नहीं, क्षमा शोभती है। कष्टों में मन का विचलन नहीं, सहने का धैर्य रहता है। यह तपस्या स्वयं के बदलाव की एक प्रक्रिया है। यह प्रदर्शन नहीं, आत्मा के अभ्युदय की प्रेरणा है। इसमें भौतिक परिणाम पाने की महत्वाकांक्षा नहीं, सभी चाहों का संन्यास है।

शिव ने संसार और संन्यास दोनों को जीया है। उन्होंने जीवन को नई और परिपूर्ण शैली दी। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति की जीवन में आवश्यकता और उपयोगिता का प्रशिक्षण दिया। कला, साहित्य, शिल्प, मनोविज्ञान, विज्ञान, पराविज्ञान और शिक्षा के साथ साधना के मानक निश्चित किए। सबको काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की पुरुषार्थ चतुष्टयी की सार्थकता सिखलाई। वे भारतीय जीवन-दर्शन के पुरोधा हैं। आज उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सृष्टि के इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्रोत है। लेकिन हम इतने भोले हैं कि अपने शंकर को नहीं समझ पाए, उनको समझना, जानना एवं आत्मसात करना हमारे लिये स्वाभिमान और आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला अनुभव सिद्ध हो सकता है। मानवीय जीवन के सभी आयाम शिव से ही पूर्णत्व को पाते हैं।

आज चारों ओर अनैतिकता, आतंक, अराजकता और अनुशासनहीनता का बोलबाला है। व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र- हर कहीं दरारे ही दरारे हैं, हर कहीं टूटन एवं बिखराव है। मानवीय दृष्टि एवं जीवन मूल्य खोजने पर भी नहीं मिल रहे हैं। मनुष्य आकृति से मनुष्य रह गया है, उसकी प्रकृति तो राक्षसी हो चली है। मानवता क्षत-विक्षत होकर कराह रही है। इन सबका कारण है कि हमने आत्म पक्ष को भुला दिया है। इन विकट स्थितियों में महादेव ही हमें बचा सकते हैं, क्योंकि शिव ने जगत की रक्षा हेतु बार-बार और अनेक बार उपक्रम किये।

वस्तुत: अपने विरोधियों एवं शत्रुओं को मित्रवत बना लेना ही सच्ची शिव भक्ति है। जिन्हें समाज तिरस्कृत करता है उन्हें शिव गले लगाते हैं। तभी तो अछूत सर्प उनके गले का हार है, अधम रूपी भूत-पिशाच शिव के साथी एवं गण हैं। समाज जिनकी उपेक्षा करता है, शंकर उन्हें आमंत्रित करते हैं। शिव की बरात में आए नंग-धड़ंग, अंग-भंग, भूत-पिशाच इसी तथ्य को दृढ़ करते हैं। इस लिहाज से शिव सच्चे पतित पावन हैं। उनके इसी स्वभाव के कारण देवताओं के अलावा दानव भी शिव का आदर करते हैं। सचमुच! धन्य है उनकी तितिक्षा, कष्ट-सहिष्णुता, दृढ़-संकल्पशक्ति, धैर्यशीलता, आत्मनिष्ठा और अखण्ड साधनाशीलता।

भारतीय संस्कृति की भांति शिव परिवार में भी समन्वयकारी गुण दृष्टिगोचर होते हैं। वहां जन्मजात विरोधी स्वभाव के प्राणी भी शिव के प्रताप से परस्पर प्रेमपूर्वक निवास करते हैं। शंकर का वाहन बैल है तो पार्वती का वाहन सिंह, गणेश का वाहन चूहा है तो शिव के गले का हार सर्प एवं कार्तिकेय का वाहन मयूर है। ये सभी परस्पर वैर भाव को छोड़कर सहयोग एवं सद्भाव से रहते हैं। शिव परिवार का यह आदर्श रूप प्रत्येक परिवार एवं समाज के लिए ग्राह्य है। आज समाज एवं राष्ट्र में ऐसे ही सद्भाव, सौहार्द एवं समन्वय की आवश्यकता है।

ललित गर्ग
(ये लेखक के अपने विचार है)

क्या चर्च का भाजपा के खिलाफ फतवा राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं?

चर्च का नाम सुनते ही ध्यान में आते हैं सगााई के लिए सूली पर चढ़े प्रभु ईसा मसीह, मन की गहराई तक उतर जाने वाली शांति और मानवता का संदेश देती बाईबल परंतु आजकल की चर्च का अर्थ केवल इतना ही सबकुछ नहीं है। चर्च पर धन बल के सहारे गरीबों का धर्म खरीदने के आरोप तो ब्रिटिश काल से लगते रहे परंतु अब चर्च राजनीति में भी उतर आई है। मनपसंद प्रत्याशियों को वोट देना, किसके पक्ष में मतदान करना और किसका बहिष्कार इसका फैसला भी चर्च करती है। अंतर केवल इतना है कि अगर एसा ही काम मठ-मंदिर करे तो उसका हल्ला मच जाता है परंतु चर्च की राजनीति उसकी घंटियों के शोर में दब गई है। पूर्वोत्तर में तीन राज्यों की विधानसभाओं के लिए इसी महीने मतदान होना है। इसको लेकर नागालैंड की बैपटिस्ट चर्च ने एक खुला पत्र लिख कर कहा है कि लोग भाजपा का विरोध करें क्योंकि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक शाखा है। लोगों को संघ का भय दिखाया जा रहा है परंतु असलीयत यह है कि चर्च पूर्वोत्तर में देश की बढ़ रही रुचि व केंद्र सरकार द्वारा दिए जा रहे ध्यान से चिंतित है। चर्च अभी तक गलत दावा करती आरही है कि इस इलाके में लगभग सारी आबादी इसाई बन चुकी है, जबकि सगााई यह है कि यहां का समाज आज भी कबीलों में बंटा और अपनी उस आस्थाओं से जुड़ा है जो वृहत हिंदू समाज का ही अंग हैं। सगााई सामने आने और जमीन दरकने की आशंका से चर्च चिंतित है और पूरा प्रयास है कि भाजपा जैसा कोई राष्ट्रवादी दल इस इलाके में प्रवेश न कर सके। चर्च की विदेशी धन पर चल रही दुकानदारी यूं ही चलती रहे।पुराणों में नागभूमि के नाम से वर्णित नगालैंड में राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों और विचारधाराओं के बजाय आदिवासियों, गांवों और व्यक्तिगत मुद्दों पर चुनाव लड़े जाते हैं। परंतु अबकी बार बैपटिस्ट चर्च की तरफ से कहा गया है कि अनुयायी पैसे और विकास की बात के नाम पर ईसाई सिद्धांतों और श्रद्धा को उन लोगों के हाथों में न सौंपे जो यीशु मसीह के दिल को घायल करने की फिराक में रहते हैं। रा%य में बैप्टिस्ट चर्चों की सर्वो%च संस्था नागालैंड बैपटिस्ट चर्च परिषद् ने नगालैंड की सभी पार्टियों के अध्यक्षों के नाम एक खुला खत लिखा है कि भाजपा सरकार में अल्पसंख्य समुदायों के लिए में सबसे बुरा अनुभव किया है। एनबीसीसी के प्रवक्ता ने कहा-हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में बीजेपी के सत्ता में रहने की वजह से हिंदुत्व का आंदोलन अभूतपूर्व तरीके से मजबूत और आक्रामक हुआ है। प्रभु जरूर रो रहे होंगे जब नगा नेता उन लोगों के पीछे गए जो भारत में हमारी जमीन पर ईसाई धर्म को नष्ट करना चाहते हैं। चर्च के नेता ईसाई बाहुल्य तीन रा%यों मेघालय, नगालैंड और मिजोरम में बीजेपी की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को लेकर सावधान हैं। नागालैंड में बीजेपी ने नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक पीपल्स पार्टी (एनडीपीपी) के साथ गठजोड़ किया है।

अंग्रेजों ने अपने शासन के दौरान देश के वनवासी व गिरीवासी इलाकों में इसाई मिशनरियों को खूब प्रोत्साहन दिया और भारतीयों के प्रवेश पर रोक लगा दी। इसका असर यह हुआ कि यहां चर्च ने बड़ी तेजी से अपने पांव पसारे परंतु पूरी ताकत झोंकने के बाद भी इन इलाकों को पूरी तरह क्रॉस की छाया के नीचे नहीं ला पाई। सरकारी आंकड़ों के अनुसार नगालैंड की जनसंख्या 88 प्रतिशत इसाई, 9 प्रतिशत हिंदू और 2 प्रतिशत मुस्लिम है। लेकिन सगााई यह है कि नगा समाज अंगामी, आओ, चखेसंग, चांग, दिमासा कचारी, खियमनिंगान, कोनयाक, लोथा, फोम, पोचुरी, रेंगमा, संगतम, सूमी, इंचुंगेर, कुकी और जेलियांग आदि जातियों में विभक्त है और अपने कबिलाई रितिरिवाजों का पालन करते हैं। ये रितिरिवाज वृहत हिंदू धर्म के अंग माने जाते हैं। लेकिन पूर्वोत्तर की राजनीति व प्रशासनिक व्यवस्था में चर्च का अत्यधिक हस्तक्षेप होने के कारण क्रिसमस वाले दिन अपने घर के बाहर तारे व क्रॉस से सजावट करने वाले हर परिवार को इसाई मान लिया जाता है। जैसा कि सभी जानते हैं कि हिंदू समाज सभी धर्मों का पालन करने वाला है और करोड़ों लोग हिंदू होने के बावजूद क्रिसमस सहित अन्य धर्मों के समारोह भी मनाते हैं। परंतु चर्च ने इसका अर्थ उन्हें इसाई होने में निकाल लिया है। चर्च को लगने लगा है कि कहीं चुनावों के जरिए इस क्षेत्र में राष्ट्रवादी दल के मजबूत होने से उसका झूठ दुनिया के सामने आ सकता है और शायद यही कारण है कि चर्च आज भाजपा व आरएसएस के खिलाफ इस तरह अलोकतांत्रिक फतवा जारी कर रही है।

चर्च का डरना स्वभाविक भी है क्योंकि नगालैंड 1 दिसंबर, 1963 को देश का 16वां रा%य बना परंतु संघ ने इससे पहले ही वहां अपना काम शुरू कर दिया था। नगालैंड के गवर्नर पद्मनाभ आचार्य ने वहां भारत मेरा घर के नाम से अभियान शुरू किया था। आचार्य आरएसएस से जुड़े हुए थे। आरएसएस को इस इलाके में लोगों ने 90 के दशक से अहमियत देनी शुरू की थी। आज लोग संघ को मानने लगे हैं। पहले तो उन्हें संघ के बारे में पता ही नहीं था, लेकिन अब लोगों को ये अंदाजा है कि आरएसएस लोगों और समाज के भले के लिए काम कर रहा है। लोगों का हम पर भरोसा बढ़ रहा है। हम समाज को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। चर्च की इस अलोकतांत्रिक हरकत पर देश के सेक्युलर तानेबाने ने न जाने क्यों मुंह में दही जमा लिया है। क्या यह धर्म का राजनीति में हस्तक्षेप नहीं? गुजरात विधानसभा चुनाव में भी गांधीनगर के आर्च बिशप थॉमस मैकवान ने चिट्ठी लिखकर ईसाई समुदाय से अपील की थी कि वे 'राष्ट्रवादी ताकतों' को हराने के लिए मतदान करें। चर्च का इस तरह निरंतर राजनीति में हस्तक्षेप स्पष्ट तौर पर सर्वो%च न्यायालय के निर्णय एवं चुनाव आयोग की आचार संहिता का उल्लंघन है और इसे सख्ती से रोका जाना चाहिए।

राकेश सैन
(ये लेखक के अपने विचार है)

आज वैलंटाइन डे

जीवन में वरदान प्रेम है,
है उजली इक आशा!
अंतर्मन में नेह समाया, नही देह की भाषा!!
लिये समर्पण, त्याग औश् निष्ठा,
भाव सुहाने प्रमुदित हैं
प्रेम को जिसने पूजा, समझा,
वह तो हर पल हर्षित है
दमकेगा फिर से नव सूरज,
होगा दूर कुहासा !
अंतर्मन में नेह समाया,
नहीं देह की भाषा !!
राधा.श्याम मिले जीवन में,
याद सदा शीरी.फरहाद
ढाई आखर महक रहा जबए
तब लब पर ना हो फरियाद
नये दौर ने दूषित होकर,
बदली क्यों परिभाषा !
अंतर्मन में नेह समाया,
नहीं देह की भाषा !!
अंतस का सौंदर्य प्रस्फुटित,
बाह्य रूप बेमानी है
प्रीति को जिसने ईश्वर माना,
उसकी ही ज़िंन्दगानी है
उर सबके होंगे फिर उजले,
यही आज प्रत्याशा !
अंतर्मन में नेह समाया,
नहीं देह की भाषा !!

प्रो.शरद नारायण खरे